आभार

विकास की सम्पूणर्ता को प्राप्त करने में महिलाओं का सशक्त तथा विभिन्न क्षेत्रो में सहभागी होना, एक अपरिहार्य पहलू है। यही कारण है कि भूमण्डीकरण के दौर में महिलाओं की सहभागिता तथा आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण पर वैश्विक स्तर पर आम सहमति है। इसके लिए चहुँमुखी प्रयास वैश्विक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर किये जा रहे है, जिसके सकारात्मक पहलुओं का वैज्ञानिक, तार्किक एवं मानवीय दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता रहा है।

इस सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए मैनें अपने शोध प्रबन्ध **''महिलाओं की सहभागिता तथा सशक्तिकरण में मनरेगा की भूमिका– उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी जिले (कौशाम्बी विकास खण्ड) के विशेष सन्दर्भ में''** का चयन तार्किक, वैज्ञानिक एवं प्रसंगानुसार किया है। इस शोध प्रबन्ध के शीर्षक चयन से लेकर शोध प्रबन्ध के सारगर्भित, वैज्ञानिक एवं सफल लेखन तक के कार्य में अपने श्रद्धेय शोध निर्देशक **प्रो० सार्तिक बाग** का मैं आजीवन ऋणी रहूँगी, जिनके ज्ञानपूर्ण कुशल मार्गदर्शन में शोध प्रबंध कार्य बिना किसी व्यवधान के गतिशील रहा, और गुरूवर की वात्सल्यपूर्ण प्रेम और कुशल मार्गदर्शक से शोध प्रबन्ध ने अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त किया है।

इसी क्रम में मैं अपने विभाग के **प्रो० रिपुसूदन सिंह, प्रो० शशिकान्त पाण्डेय, डॉ० सिद्धार्थ मुखर्जी, डॉ० प्रीति चौधरी** एवं अन्य गुरूजनों का आभार व्यक्त करती हूँ,, जिनके बहुमूल्य दिशा–निर्देश एवं सुझाव प्राप्त होने से शोध प्रबन्ध कार्य को पूरा करने में सहायता मिली। साथ ही मैं राजनीति विज्ञान विभाग के सभी कर्मचारियों का सहृदय से आभारी हूँ, जिनका समय–समय पर सहयोग प्राप्त होता रहा है।

शोध अध्ययन के क्रम में बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली, तीनमूर्ति पुस्तकालय नई दिल्ली, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, तथा लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, के

पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग के बिना शोध कार्य पूर्ण करने में कठिनाई होती।

इसी क्रम में कौशाम्बी विकास खण्ड के प्रखण्ड विकास अधिकारी, ग्रामीण रोजगार सेवक, सम्बन्धित विभाग के कर्मचारी सम्बन्धित क्षेत्र के ग्राम प्रधान एवं कार्य स्थल पर कार्यरत् श्रमिकों का प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करती हूॅ। जिनके सहयोग से शोध कार्य व्यवहारिकता का समावेश हुआ है।

इसी क्रम में मैं अपने माता श्रीमती शान्ति देवी, पिता श्री प्रेमचन्द्र, तथा भाई एवं बहन का सदैव आभारी एवं ऋणी रहूँगी, जिनका हमेशा सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है और शोध प्रबन्ध के लेखन हेतु प्रेरित एवं उत्साहित करते रहें।

इसी क्रम में मैं अपनी सहपाठी दीप्ति सिंह, सुचित्रा दिवाकर, वीर कुमार राय, राजीव कुमार प्रजापति, रोहित कुमार एवं अन्य वरिष्ठ मित्रों की आभारी हूँ।

मैं इस शोध प्रबन्ध कार्य में कप्यूटर डिजानिंग एवं टंकण के लिए श्री सुबोध कुमार शुक्ला एवं श्रीमती रिंकी शुक्ला के प्रति का आभार व्यक्त करती हूॅ।

माया भारती